

श्री भोक्षमार्ग प्रकाशक  
प्रवचन नं. ८  
अधिकार ७मो  
स्थल:सुवर्णापुरी ता.:१७.०८.६२ शुक्रवार

मंगलाचरण

शमो लोअे सव्व अरिहंताशं;  
शमो लोअे सव्व सिद्धाशं;  
शमो लोअे सव्व आयरियाशं;  
शमो लोअे सव्व उवज्जयाशं;  
शमो लोअे सव्व त्रिकाणवती साड्डुशं;  
ॐकार बिन्दु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।  
कामदं भोक्षदं यैव ॐकाराय नमोनमः॥  
मंगलं त्मगवान् वीरो मंगलं गौतमो गण्डी ।  
मंगलं कुंदकुंदार्यो जैन धर्मस्तु मंगलम् ॥  
नमः समयसाराय स्वानुभूत्या यकासते ।  
यित्स्वत्मावाय त्मावाय सर्व त्मावान्तरच्छिदे ॥  
त्रिकाण दिव्यध्वनि दातार...

आ भोक्षमार्ग प्रकाशक सप्तमा अध्याय, उसमें दो नयके अवलंबनवालेका कथन है. “निश्चयनयका क्या स्वरूप है और व्यवहारनयका क्या स्वरूप है उसे जाने बिना, द्योयका हम अवलंबनका साधन करते हैं, जैसे माननेवाला मिथ्यादृष्टि है. उसका कथन यलते है....” समजमें आया? “जैन मतमें दो नय कडा है....” जैन मतमें दो है ने? दूसरेमें कडा है पर वो साधारण परमार्थ व्यवहारने उपचारनी बधी वातुं. वीतराग अत्मिप्रायमें दो नयका कथन यला है. संप्रदायमें द्विगंबरमें जन्मे छतें, उसकी बात यलती है. द्विगंबरमें जन्मेकी बात. जन्म हुआ छतां निश्चय क्या? व्यवहार क्या? हमारे तो द्योय नयका साधन साधना. क्योंकि द्योय नय जिन मतमें तो यली है तो अमशासे निश्चयका त्मान बिना और व्यवहार किसको कहते है? उसका ज्ञान बिना द्योयका साधन साधना अेम

माननेवाला मिथ्यादृष्टि है. “जाते तातें भ्रम लिये द्योउनिका साधन साधे है. ते ली जव मिथ्यादृष्टि ज्ञानने....” कही, बेय नयनुं साधन करवुं. नय द्यो नय है के नही? आते है द्यो, “अब धन्डीकी प्रवृत्तिका विशेष दिभाधये है....”

“अंतरंग विषै आप तौ निर्धार करि यथावत् निश्चय व्यवहार भोक्षमार्गको पहियान्या नाहीं....” आ द्विगंबरमें जन्मे उसको लागु पडते है. अहींया तो श्वेतांबर आदिने तो यहां अन्यमतमें डाल दिया है. वो पंचम अध्यायमें. द्विगंबरमें जन्मे छते निश्चयका क्या स्वरूप, व्यवहारका क्या स्वरूप जाने बिना हमारे हम द्योय नय मानते है. द्योय नय मानते है अने अमे द्योय नयका साधन और द्योय नय हम अंगीकार करते है अैसा माननेवालाकी दृष्टिमें क्या है? “अंतरंग विषै तो आप निर्धार करि, निश्चय करि....” के क्या निश्चय मेरा अखंड गुण स्वरूप मेरा आत्मा अनंतगुणका पुंज, उसका आश्रय करके जो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-यारित्र प्रगट हो उसको निश्चय कहेते है. धसका तो निर्धार है ही नहीं. नक्की है नहीं. जैसे कहे वैसे कल्पनासे मान ले के हम तो निश्चय मानते है. सिद्ध समान हमारा स्वरूप है. हमारी पर्यायमें मलिनता इलिनता है ही नहीं. अैसा निश्चय कही सत्यार्थ निर्धार करे बिना निश्चयको मानते है. और व्यवहार? वो ली निर्धार करते नहि कि व्यवहार किसको कहेना. समजमें आया?

अंदरमें आत्मामें निश्चयका त्मान हुअे पीछे अथवा निश्चयका त्मानके साथमें दया, दान, व्रत, भक्तिका राग आता है उसका ज्ञानना उसका नाम व्यवहारनय है. अैसा तो निर्धार करते नहि, नक्की करते नहि “और द्योय भोक्षमार्गको पहियान्या नाहीं. जिनआज्ञा मानि....” वीतराग द्योय नय कहेते है तो द्योय नयका हमारेको मानना क्योकि अेक नय छोडेगा तो अेकांत हो जायेगा. हें? (श्रोता : बेय नय) अे तो बीज वात छे. बे नयने न छोडवा उसका अर्थ, निश्चयतत्त्वका जो स्वरूप है उसको जो छोडेगा तो तत्त्वका नाश हो जायेगा. और व्यवहार बीयमें गुणस्थान त्मेद योथुं, पांचमुं, छही भूमिका और रागका प्रकार है, अैसा तो जैसे है अैसे न जाने, तो व्यवहार छोडया कहेनेमें (आता है). आदरणीय अैसी बात नहीं.

‘जिनमतं प्रवर्तः’ जिनमतमें प्रवर्तनाना तो याहते हो तो द्योय नय नहि छोडना. उसका अर्थ क्या? के जो निश्चय छोडेगा तो तत्त्वदृष्टि नहि रहेगी, और व्यवहार छोडेगा तो बीयमें त्मेद आता है. गुणस्थानमें सम्यग्दर्शन, श्रावकपशा, मुनिपशा और रागकी मंदता और तीव्रता पहेले तीव्र पछी मंद. अैसी शुद्धिकी पहेले मंद पछी वृद्धि, अैसा

जो भेद पडते है, वो व्यवहारनयका विषय है. उसको छोडे तो गुणस्थान भेद रहते नहि, तीर्थ ही रहते नहि, आदरणीय नही. समजमें आया? निश्चयको क्या स्वरूप है ज्ञानते नहि, व्यवहार किसको कहेते है ज्ञानते नहि अने अमे द्योय नयका साधन करते है, द्योयनयको हम अंगीकार करते है. तो कहेते है के इसको जिनआज्ञा मानि निर्धार कर्या विना निश्चय किया नही. "जिनआज्ञा मानी निश्चय व्यवहाररूप मोक्षमार्ग द्योय प्रकार माने है...." अही तो मोक्षमार्गनुं लीधुं छे ने? मोक्षमार्ग दो प्रकारका मानते है. अज्ञानी निश्चय व्यवहारका, निश्चय निर्धार क्या यीज है उसका प्रबोध, बोध हुअे बिना, जिनआज्ञा है हमारे तो जिनआज्ञा दो नयकी है तो दो नयका दो मोक्षमार्ग है. कुंदकुंदाचार्य कहेते है पंथास्तिकायमें 'जीव धम्मादिसद्दहणं सम्मतं' समजमें आया? अने आत्माकी श्रद्धा, वो निश्चय श्रद्धा, वो व्यवहार द्योय मोक्षमार्ग आर्षमें आचार्योंने कहा है तो हमारे दो ही मानना. समजमें आया?

ऐसी "जिनआज्ञा मानि निश्चय...." नाम सत्यार्थ मोक्षमार्ग क्या है? "व्यवहार...." नाम उपचार क्या है? "उसको ज्ञाने बिना मोक्षमार्ग द्योय प्रकार माने है. सो मोक्षमार्ग दो है नाहीं, मोक्षमार्ग दो नाहीं...." ओहोहो! तो कहे के नही. ओ टोडरमल घरमें कहेते है हमारे तो आर्ष वाक्यमें दो मोक्षमार्ग यलता है जैसे कहेते है कितने लोग. अरे भगवान! गाथा लीधा पहेले आधार, आचारज कहेते है की व्यवहार अभूतार्थ है. जिसको मोक्षमार्ग व्यवहारसे कहा वो अभूतार्थ है, असत्यार्थ है अे व्यवहार मोक्षमार्ग, मोक्षमार्ग है नही. ऐसी तो अगियारमी गाथामें जैनशासनका प्राण अगियारमी गाथा है. समजमें आया? 'व्यवहारो अभूदृत्थो' व्यवहार अभूतार्थ, असत्यार्थ, असत्य अर्थको प्रगट करती है और शुद्धनय सत्यार्थको, सत्को, सत्यभावको, सत्य अर्थको प्रगट करती है अे अेक गाथाना दो पद पहेले सारा शासनकी तात्पर्य क्या यीज है उसको वल गाथासे उसका तात्पर्य निकलते है. समजमें आया? दो मोक्षमार्ग माने.

"सो मोक्षमार्ग द्योय नाहीं, मोक्षमार्ग दो नाहीं...." बराबर है. बे मोक्षमार्ग नहि तो क्युं कहा? आचार्योंने क्युं कहा? और पुरुषार्थसिद्धउपायमें ली दो ही मोक्षमार्ग यला है. अने दो ही मोक्षमार्गसे मोक्ष छोते है ऐसी गाथा है. समजमें आया? वो तो कहेते है के मार्ग जो निश्चय है, वो ही यथार्थ ने सत्य है. बीयमें देव-गुरु-शास्त्रकी श्रद्धाका राग, पंथमलाप्रतका परिणाम, अगियार अंगका बोध, आदि जो व्यवहार विकल्प उठते है, उसको ज्ञानना, वो काणे ज्ञानना के है. वो व्यवहार मोक्षमार्ग है, अेटले के व्यवहार मोक्षमार्ग है नही. समजमें आया? "सो मोक्षमार्ग द्योय नाहीं. मोक्षमार्गका निरूपण...." द्योय

प्रकार है. भोक्षमार्गका कथन दो प्रकार है. उसकी कथनीका दो प्रकार है, उसका निरूपणका दो प्रकार है, पण मार्ग दो है ऐसा नहीं. समझमें आया? निरूपण दो प्रकार है. निरूपण नाम कथन. उसकी कथनी दो प्रकारकी है, मार्ग दो प्रकारका है ऐसा नहीं.

हवे क्या कहते हैं कथनीका प्रकार! “जहां साया भोक्षमार्गकों, भोक्षमार्ग निरूपण सो निश्चय भोक्षमार्ग है....” महासिद्धांत है आ बधा. जहां सत्य भोक्षमार्ग अपना शुद्ध यैतन्य द्रव्य अखंड पूर्णानंद आ उसका अंतरमुख लेकर, निर्विकल्प, सम्यग्दर्शनकी प्रतीति, सम्यग्दर्शनरूप प्रतीति, सम्यक् स्वसंवेदन आत्माका आत्म ज्ञान, और आत्माका स्वरूपमें रमणता करना वो निश्चय चारित्र. वो ही सख्या भोक्षमार्ग है उसको भोक्षमार्ग कथन करना, उसका नाम निश्चय है. समझमें आया? “और जहां जो भोक्षमार्ग तौ है ही नाहीं.....” आहाहा! व्यवहार कहते हैं ऐसा है ही नहीं. व्यवहार कहते हैं के भैया देव - गुरु - शास्त्रकी श्रद्धा, भक्ति, पूजा और अगियार अंगका ज्ञान, अठ्यावीस भूणगुणका पालन, उसको हम व्यवहार भोक्षमार्ग व्यवहारनयसे कहते हैं. उसका अर्थ व्यवहार कहते हैं के भोक्षमार्ग है, निश्चय कहते हैं के नहीं. वो तो बंधका मार्गको व्यवहारनय भोक्षमार्ग आरोपसे कहते हैं. वस्तु ऐसी है नहीं. समझमें आया?

दोउरमल तो व्यवहार ने निश्चय, निश्चयसे कहते हैं. क्या गया खंडुभाई! कागण बागण आधो के नहि मधुकरे ते केम वात करता नथी? द्रव्यसंग्रहमां अेम के व्यवहार भोक्षमार्ग आम हाव्यो ने निश्चय भोक्षमार्ग आम हाव्यो छे ने अेवु बधु आव्युं छे शरणारामनुं. समझाणुं कांई? क्या कहते हैं? भैया, व्यवहार जो भोक्षमार्ग कहा है, “वो भोक्षमार्ग है तो नाहीं....” परंतु भोक्षमार्ग अपना शुद्ध स्वरूप उसकी श्रद्धा, ज्ञान ने रमणताकी निर्विकल्प परिणति. निर्विकल्प, निर्विकारी दशा वो निश्चय भोक्षमार्ग, “और भोक्षमार्गमें निमित्त है....” निमित्त है, शुद्ध उपदानकी परिणति अपनी वो निश्चय भोक्षमार्ग. समझमें आया? शुद्ध आत्मा पूर्णानंद प्रभु, अखंड गुणकी यीज अेक आभी, आ उसका आश्रय करके जो सम्यग्दर्शन निर्विकल्प प्रतीत होता है. उसका आश्रयसे आत्मज्ञान उत्पन्न होता है आ उसमें लीनता, लीनता वीतरागता होती है. वो निश्चय परिणति वो आत्माका सख्या भोक्षमार्ग. समझमें आया? “वो भोक्षमार्गमें निमित्त है....” निमित्त है क्युं? व्यवहार. निमित्त है उसका अर्थ, वो आत्माका निश्चय भोक्षमार्गमें अर्द्धित्कर है. समझमें आया?

जैसे निमित्त पर यीजमें कुछ कार्यकारी नहि, तो उसको निमित्त कहनेमें आता है. समझमें आया? शेठी! इतना वर्ष ऐसे ने ऐसे गुमाया वो बात तुम्हारी करते

है. वो कहते हैं के जैनमें द्विगंबरमें जन्म लिया, पशु निश्चय व्यवहार क्या उसका निर्धार ते कर्या नहि हों. हमतो मानते हैं, हम तो दो य मोक्षमार्ग मानते हैं. दो य मोक्षमार्ग. पुराना है ज्ञानदान द्विगंबरका. समजमें आया? “तो कहते हैं मोक्षमार्ग तो है नाहीं और निश्चय मोक्षमार्गमें निमित्त है....” निमित्त है क्या? देव-गुरु-शास्त्रकी श्रद्धाका राग, पंचमहाव्रतका राग, और अगियार अंगका पर तरङ्गका लुकावका ज्ञान राग मिश्रित. वो सब निश्चय मोक्षमार्गकी अंतर निर्विकारी परिणति, परिणति नाम पर्याय, पर्याय नाम दशा. वीतरागी श्रद्धा, ज्ञान ने रमणता वो निश्चय. ये सख्या मोक्षमार्ग, सत्य मार्ग, यथार्थ मार्ग वो ही मार्गसे मुक्ति होती है.

वो मार्गमें निमित्तरूप पडते हैं. व्यवहार रत्नत्रयका विकल्प, व्यवहार रत्नत्रयका विकल्प - राग वो निमित्त है, “वा सड्यारी है....” क्या? वो निश्चय मोक्षमार्गकी अंतर परिणति यलती है, उसकी सड्यारी साथ साथमें ऐसा राग होता है. व्यवहार रत्नत्रय देव-गुरु-शास्त्रकी श्रद्धाका राग आदि साथमें सड्यर... सड्यर साथे साथे उनके कारणसे वो यलते हैं. अपने कारणसे अपनी निर्विकल्प परिणति यलती है, अने रागके कारणसे राग पशु सड्यर निश्चयकी साथे यलता है. समजमें आया? अक माणस यलते होय ने माणस, यलते तो अपने पगसे, पशु सड्यर क्या कहते हैं तुम्हारेमें सथवारो, सथवारा - साथी साथी अपने कारणसे यलते हैं. वो यलनेवाले अपने कारणसे यलते हैं. ऐसे अपना शुद्ध प्रभु आत्मा, वो शरीर, वाणी, मनकी क्रिया मेरी नहीं. पुण्य-पापका विकल्प भी मैं नहीं. मैं निर्विकल्प शुद्ध आत्मा हूं, मैं ज्ञायकभाव हूं, परम अपंड परम स्वभाव भाव हूं ऐसी अंतरमुष छोकर, आत्म अभिमुष छोकर, परिणाम जे निर्मण शुद्ध श्रद्धा-ज्ञान-रमणता वो निश्चय मोक्षमार्ग साथमें सड्यर, सड्यर साथमें रहनेवाला, साथमें रहनेवाला दो अक नहीं. दो अक है? अक नहीं. निश्चयमें व्यवहार नहि ने व्यवहारमें निश्चय नहीं. नहितर दो प्रकारकी कथनी यले नहीं. समजमें आया? “मोक्षमार्गका निमित्त है, सड्यारी है....” साथे यालनार है.

“ताकौ उपचार करि, उपचार करि....” आरोप करी “मोक्षमार्ग कहीअे....” वो रागको मोक्षमार्ग कहीअे, त्तेदको मोक्षमार्ग कहीअे निमित्त नाम विकल्प व्यवहार रत्नत्रय उत्पन्न हुआ वो निमित्तको मोक्षमार्ग कहीअे. ये सड्यर रहते हैं तो साथमें रहनेवाला कही वो मोक्षमार्ग परिणति यलती है. साथमें रहनेवालेको मोक्षमार्ग कहीअे अे व्यवहार है. अे व्यवहार मोक्षमार्ग है... है नहि, पशु निमित्तको देभकर,

સહચારી દેખકર, ઉપચારસે ઉસકો વ્યવહાર મોક્ષમાર્ગકા આરોપ કહેનેમં આયા. સમજમં આયા? બહુત ઝઘડા ચાલે આ નિશ્ચય વ્યવહારના તો. કોઈ કહે કે વ્યવહાર હોય તો નિશ્ચય હોતા હૈ, કોઈ વળી કહે કે ચોથેથી બારમા સુધી વ્યવહાર મોક્ષમાર્ગ હૈ. તેરમે નિશ્ચય મોક્ષમાર્ગ પ્રગટ હોતા હૈ, વળી કોઈ વો પરમાનંદ આદિ થા ગોદિકાજી ક્ષુલ્લક થા ને પહેલે! આર્યસમાજમં તો વો વળી કહતે હૈ કે સાતમે, પહેલે તો બારમે કહતે થે વ્યવહાર મોક્ષમાર્ગ, પછી વળી છઠ્ઠે વ્યવહાર મોક્ષમાર્ગ હૈ નિશ્ચય તો સાતમે હોતા હૈ. અભેદ ત્રણ હોય તબલગ તે બિન નિશ્ચય હોતા નહીં. અનેક કથની. જગત અપના સત્ય ને ઉપચાર ક્યા હૈ, સમજે બિના અનેક માન્યતા ચલી હૈ.

ભગવાન, આચાર્ય કહતે હૈ ઉસકા રહસ્ય ખોલતે હૈ. પંડિતજી ટોડરમલજી ઉસકા રહસ્ય ખોલતે હૈ, કે શાસ્ત્રમં દો પ્રકારકી કથની ચલી હૈ. નિરૂપણ ચલા હૈ. નિશ્ચયકો યથાર્થ સચ્યા મોક્ષમાર્ગ કહેના, અને રાગ સહચર દેખકર ઉસકો ઉપચારસે, આરોપસે, વ્યવહાર કહના. જો હૈ હી નહિ મોક્ષમાર્ગ હૈ તો બંધમાર્ગ, પણ મોક્ષમાર્ગકી સાથમં નિમિત્ત દેખકર, મોક્ષમાર્ગકા આરોપ દે દિયા. સમજમં આયા? ભારે કઠણ આ! લોકોએ બહારથી આ માન્યુ હોય ને એને એવું લાગે પણ આ તો બધું રસાતાળ જાશે. બાબુભાઈ! વ્યવહારથી કરતે કરતે નિશ્ચય હો, વ્યવહાર હો તો નિશ્ચય હો, આંહી તો કહતે હૈ કે નિશ્ચય હૈ તો વ્યવહાર હૈ એસા ભી નહીં. વ્યવહાર હૈ તો નિશ્ચય હો એસા ભી (નહીં). સહચર અપને અપને કારણસે દોય હૈ. એક યથાર્થ હૈ અને એકકો નિમિત્ત દેખકર ઉપચારસે મોક્ષમાર્ગ કહા હૈ. બરાબર હૈ? કહો.

“જાતેં (તેથી) નિશ્ચય વ્યવહારકા સર્વત્ર એસા હી લક્ષણ હૈ....” મહાસિદ્ધાંત દેખો. જેથી “નિશ્ચય અને વ્યવહારકા....” સમજમં આયા? “સર્વત્ર એસા હી લક્ષણ હૈ....” ક્યા? કે નિશ્ચય વસ્તુકી પરિણતિ વો નિશ્ચય ઔર સાથમં રાગ આયે વો વ્યવહાર. તો દર્શનકા બે પ્રકાર સમ્યગ્દર્શન, નિર્વિકલ્પ આત્માકા પ્રતીત હોના વો નિશ્ચય, ઔર બીયમં રાગ આયા નવતત્ત્વકી શ્રદ્ધાકા વો વ્યવહાર. જ્ઞાન-આત્માકા જ્ઞાન સમ્યક્ હુઆ વો નિશ્ચય. શાસ્ત્રકા જ્ઞાન પરસન્મુખ હુઆ વો વ્યવહાર, ચારિત્ર અપના સ્વરૂપમં રમણ કરના વો નિશ્ચય ઔર પંચમહાવ્રતકા અઠ્યાવીસ મૂળ ગુણકા વિકલ્પ આયા વો વ્યવહાર. સમિતિ... આ સર્વત્ર છે ને સર્વત્ર સમજમં આયા? સમિતિ દો પ્રકારકી કથની સમિતિકી ચલી હૈ. એક નિશ્ચય સમિતિ, વ્યવહાર સમિતિ. નિશ્ચય સમિતિ - અપના શુદ્ધ સ્વરૂપમં સમ્યક્ પ્રકારે ઈતિ પ્રવૃત્તિ પરિણતિ વીતરાગ પરિણતિ, અપનેમં હો યે નિશ્ચય સમિતિ, અને પર જીવકો

दुःख न हो ऐसा विकल्प उठते है, वो व्यवहार समिति है. वो निश्चयकी साथमें व्यवहार रहते है, सलयर है, वो दृष्टकर उसको व्यवहार समिति कलनेमें आया.

(श्रोता : मैत्री) दोनोकी मैत्री व्यवहारनयसे है. ठीक है पंडित પણ अर्हिया उणवे दृष्टने अक लाकडुं, लांडलुं न मूके तो. व्यवहारनयसे मैत्री कलनेमें आता है, परमार्थसे मैत्री नहि, बे विरुद्ध है. अेषे हा पाडी के ज्ञाणे मैत्री छे ने बेने हा. समजमें आया? वो तो व्यवहारनयसे प्रवचनसारमें, व्यवहारनयसे, उपचारसे निश्चयकी साथ व्यवहार है, उसको व्यवहारसे मैत्री कलनेमें (आया) आ निश्चयसे तो वेरी है. समजमें आया? आ मैत्रीका कथन भी दो प्रकारका है. समजमें आया? अक स्वरूपकी रमणता अंदर मैत्री वो निश्चय मैत्री आत्माकी और साथमें राग आता है व्यवहार मैत्रीका उपचार सलयर दृष्टकर उसमें आरोप आता है. है नही मैत्री उसको मैत्री कलना उसका नाम व्यवहार समजमें आया? नवरंगभाई! (श्रोता : ...) कीधुने? जे मोक्षमार्ग नहि, उसको मोक्षमार्ग कलना उसका नाम व्यवहार. अैसे मैत्री नही उसको व्यवहारसे मैत्री कलना उसका नाम व्यवहार. समजमें आया?

अैसे दर्शन-ज्ञान-चारित्र समिति-गुप्तिका दो प्रकारकी कथनी. अक शुभाशुभ विकल्पसे अपना स्वरूपमें गुप्त होकर निर्विकारी शांतिका स्वाद लेना वो निश्चय गुप्ति પણ साथमें अशुभसे हटकर शुभमें आया, वो व्यवहारगुप्ति. है नही, व्यवहार गुप्ति वो गुप्ति है नहि પણ निमित्तको सलयर दृष्टकर उपचारसे गुप्तिका आरोप रागमें करनेमें आया है. समजमें आया? अेम ध्यान दो प्रकार. ध्यानकी कथनी दो प्रकार. अक भगवान आत्मा! शुद्ध यैतन्यमें अकाग्र होकर अमृतका स्वादका अनुभव करते-वो निश्चयध्यान, वो निश्चय धर्मध्यान और साथमें विकल्प उठते है भगवान क्या कहते है, क्या है संसार ने क्या इलाशा वो शुभराग वो निश्चय धर्मध्यानकी साथमें सलयर दृष्टकर निमित्त दृष्टकर उपचारसे उसको धर्मध्यान कला. है नहि, धर्मध्यान उसको धर्म-ध्यान कलना उसका नाम व्यवहार. समजमें आया?

जुओ आ लक्षाज "जातैं निश्चय व्यवहारका सर्वत्र अैसा ही लक्षाज है सर्वत्र अैसा ही लक्षाज है...." कायोत्सर्ग - कायोत्सर्ग दो प्रकारकी कथनी. वस्तु अक, कथनी दो. आत्मा, शरीर, वाणी, मन ने कर्मण शरीरसे हटकर और रागसे हटकर कायोत्सर्ग, वो विकल्प है वो भी काया है, अे कर्मकी काया भावकर्म. समजमें आया? वो भावकर्मका शुभराग वो विकारकी काया उससे हटकर निर्विकल्प यैतन्यमें अकाकार योग होकर स्थिर होना, वो निश्चय कायोत्सर्ग है. छे? साथमें विकल्प उठते है कि मैं कायोत्सर्ग करुं ने अैसा हो

ઐસા હો ને વો સાથમેં રાગકો, સહચર દેખકર, ઉપચારસે કાયોત્સર્ગ કહા હૈ. સમજમેં આયા ?

એમ યોગ... યોગ, યહાં યોગ કહતે હૈ ન? આત્મામાં જોડાણ તો યોગ ભી અપના સ્વરૂપમેં નિર્વિકલ્પમાં જોડાણ હોના, ઉસકા નામ યોગ સચ્ચા હૈ. વિકલ્પ ઉઠતે હૈ વો વ્યવહાર યોગ હૈ. પુણ્ય બંધકા કારણ (હૈ) ઐસી કથની દો પ્રકારકી ચલતી હૈ. સમજમેં આયા ? ઐસે સમ, સમતા... સમતા દો પ્રકારકી કથની સમતાકી. એક આત્મામેં પુણ્ય-પાપકા રાગ રહિત સ્વભાવકી સમતા પ્રગટ હો વો નિશ્ચય સમતા હૈ. ઔર સાથમેં રાગકી મંદતાકા ક્ષમાકા શુભભાવ હો વો વ્યવહાર સમતા હૈ. સમતા એક હી હૈ કથની દો પ્રકારકી સમતાકી ચલતી હૈ. સમજમેં આયા ? ધન્નાલાલજી ! બહુ બોલ લીધા છે એ તો આમા ઓલા છે ને આમાં નિયમસાર ! નિયમસારમાં કિતના બોલ લીધા છે ને ઘણાં બોલ લીધા છે. શમ, યમ ને મૈત્રી ને દયા ને બહુત બાત ઉસમેં લિયા હૈ. સબમાં દો દો પ્રકાર લેના. ચાર આરાધના. આરાધનાના પણ દો પ્રકાર. સમજમેં આયા ? નિશ્ચય અને વ્યવહાર, સ્વરૂપકા સેવન કરના, આનંદકા નિશ્ચય આરાધન. સાથમેં વિકલ્પકા અશુભસે ટળકર વો આયા, વો વિકલ્પકો વ્યવહાર આરાધન કહનેમેં આયા. આરાધન હૈ નહીં. નવરંગભાઈ !

એમ યમ. યમ દો પ્રકારકા. વો મહાવ્રત હૈ ને ? એક નિશ્ચય મહાવ્રત ને એક વ્યવહાર મહાવ્રત યમ. અંતરકા સ્વરૂપમેં, વીતરાગ પરિણતિ હોકર, સ્વરૂપમેં વિંટાઈ જાના વો નિશ્ચય મહાવ્રત હૈ. ઔર પંચમહાવ્રતકા વિકલ્પ ઉઠતે હૈ વો નિમિત્ત સહચર દેખકર મહાવ્રતકા આરોપ દે દિયા હૈ, વો મહાવ્રત હૈ નહિ, ઉસકો મહાવ્રત કહેના વો વ્યવહાર હૈ. સમજમેં આયા ? રાજમલજી ! બે પ્રકાર સબ સમજે ? એમ દયાકા દો પ્રકાર એક નિશ્ચય દયા એક વ્યવહાર દયા. કથની દો પ્રકારકી યથાર્થમેં દયા એક પ્રકારકી, રાગકી ઉત્પત્તિ ન હોના, પુણ્ય ને પાપકા વિકલ્પ હી ઉત્પન્ન ન હોના અને આત્માકી અરાગી પરિણતિ ઉત્પન્ન હોના, વો નિશ્ચયસે અહિંસા, દયા હૈ. સાથમેં પર જીવકો ન મારનેકા આદિ વિકલ્પ ઉઠતે હૈ, એ નિમિત્ત સહચર દેખકર, આરોપસે દયા કહનેમેં આયા હૈ. એ ખરેખર દયા નહીં, રાગ એ હિંસા હૈ ઓહોહો ! પર જીવકો મૈં ન મારું રાગ હિંસા હૈ. આ હિંસા કો અહિંસા કે સાથ નિમિત્ત દેખકર દયા કહના વો આરોપસે કથન હૈ. ભારે કઠણ ભાઈ ! સમજમેં આયા ? આ સિદ્ધાંત લે લેના

“નિશ્ચય વ્યવહારકા સર્વત્ર ઐસા હી લક્ષણ હૈ. સર્વત્ર....” જૈન શાસન ચારે અનુયોગમાં કથની ચલતી હૈ. સચ્ચા વો નિશ્ચય, આરોપી સહચરકો વ્યવહાર કહતે હૈ.



“सर्वत्र ऐसा लक्षणा है....” आमां टोडरमल कितना अंतरका रहस्य भोला है. नहि वो प्रमाणिक नही. हमारी दृष्टि प्रमाणे तो प्रमाणिक. भगवान क्या करे? तेरी भी महिमा छतनी है के अनंत तीर्थकर आवे तो य तुं समज (नही). छतनी तेरी अशुद्धता भी बडी और तेरी शुद्धता भी बडी. प्रतिकूलताना गंज आवे तो पण अेक उगलुं प्रतिकूलतानो विकल्प न करे. परम आनंदमें रहनेवाला, ऐसी भी तेरी बडी शुद्धता है. समजमें आया? समिति आव्युं ने?

प्रतिक्रमण... प्रतिक्रमणका दो प्रकार. निश्चय ने व्यवहार. निश्चय प्रतिक्रमण - सख्या प्रतिक्रमण, अणआरोपीत, अणऔपचारिक प्रतिक्रमण. शुभ अने अशुभ भावसे छटकर स्वभावमें वीतरागताकी परिणति, छटकर करना, वो निश्चय प्रतिक्रमण. साथमें विकल्पका उठना मिथ्यामिदुकुंडं वो दोष हुआ ऐसा, वो रागको निमित्तको सहर देभकर उपचारसे उसको व्यवहार कलनेका व्यवहार शुं? व्यवहार प्रतिक्रमण वो पुण्यबंधका कारण है. निश्चय प्रतिक्रमण है वो भोक्षका कारण है. संवर ने निर्णरा स्वरूप है. कथनी दो प्रकारकी यले. वस्तु दो प्रकारकी नहीं.

सामायिक दो प्रकारकी. पोपटभाई! गया ओला बधा? सामायिक दो प्रकारकी. क्या है शेठी! जयपुरमें सामायिक सुना था दो प्रकारकी? बडा शहर है दिगंबरका तो वो तीनछर घर है. हें? ल्यो, आ तुम्हारे कलते है सामायिक दो प्रकारकी. अेक अपना स्वरूप अपंड शुद्ध आ उसमें समताभाव निर्विकल्पसे परिणति कर ध्यानमें रहना, वो निश्चय सामायिक है. उसके साथ विकल्प उठे शुभरागका मैं सामायिक करुं, मैं सामायिक... है नहीं, विकल्प उसको व्यवहारसे निमित्त देभकर, उपचारसे सहर देभकर सामायिक कडा. सामायिक है नहीं, ये विकल्पमें सामायिक नहीं. आलाहा! पण ऐसा अपने सुननेकी लायकात नहि तो ऐसा भिला नहीं ऐसे है ने बात तो शेठी! अपने सुननेकी लायकात छो तो ऐसे सत्य भिले बिना रहे नहीं. बात तो ऐसी है धन्नावालज्ज! सामायिक. हें? (श्रोता : ...) बात तो ऐसी है, फिर निमित्तका वांक निकालना के भई क्या करे? हमे ऐसा भिला है तो क्या करे? वो तो सब कथनी व्यवहारकी, परमार्थ नहीं. तेरी पात्रता वो समजनेकी योग्यता छो, तीर्थकर छर छो, तीर्थकरका समोवशरण छर छो. समजमें आया?

कहां से कहां? ओ आज तीर्थकर आते है समोवशरण आज आया. आलाहा! उसकी पात्रता छो तो कुदरते ऐसा निमित्त आ जता है, आया बिना रहते नहि, पराधीन नहीं. अहीं छोना है तो आना है, ऐसा नहीं. समजमें आया? आलाहा! कोई जगतका

નિમિત્ત - નિમિત્ત સંબંધ સહજ અપની ઉપાદાન યોગ્યતામેં એસા ન હો તો ન મિલે પહેલે અપને કારણસે. પ્રતિક્રમણ આદિ, સામાયિક, ભગવાનકી સ્તુતિ, યે સ્તુતિકા દો પ્રકાર. સ્તવન આતા હૈ ને! સામાયિક, પ્રતિક્રમણ આદિ આતે હૈ ને ષટ્આવશ્યક ચઉવિસંથો એ સ્તવનકા દો પ્રકાર. એ રાગ રહિત વિકલ્પ રહિત પુણ્ય-પાપ રહિત અપના સ્વરૂપકી સ્તુતિ કરકે એકાગ્ર રહેના ઉસકા નામ નિશ્ચય સ્તવન ઓર ચોવીસ તીર્થકર આદિકી સ્તવન કરના વિકલ્પ વો વ્યવહાર સ્તવન. યે સ્તવન દો પ્રકારકા કથન હૈ. યથાર્થમેં સ્તવન એક પ્રકારકા હૈ. બાબુભાઈ! બરાબર છે આ ? ઓહોહો! સામાયિક ચઉવિસંથો પછી ? વંદન... વંદન.

એ વંદનકા દો પ્રકાર. અપની વંદના કરના અંદરમેં આનંદકંદમેં ઘુસકર નિર્વિકલ્પ વંદના કરના વો નિશ્ચય વંદના હૈ. ગુરુકો વંદના કરના વો વિકલ્પ હૈ, વ્યવહાર વંદના હૈ. સમજમેં આયા ? વો વંદના હૈ નહીં. ઉસકો વંદના કહેના, ઉસકા નામ વ્યવહાર હૈ. જગતકી વિચિત્રતા ઉસકી સામે આ દલીલ. ભારે કઠણ! સામાયિક, ચઉવિસંથો, વંદના, પ્રતિક્રમણ, કાયોત્સર્ગ અને પ્રત્યાખ્યાન. પ્રત્યાખ્યાનકા દો પ્રકાર. ભગવાન આત્મા અપના સ્વરૂપમેં શુદ્ધતાના આનંદના સ્વાદમેં ઝુમ જાય, ડોલે અંદર આનંદમેં, આ ઉસમેં ઉસકા નામ નિશ્ચય પ્રત્યાખ્યાન. વિકલ્પ ઉઠા કે મેં પ્રત્યાખ્યાન કરું એસા પ્રત્યાખ્યાન મેં ક્રિયા એસા રાગ ઉઠે યે વ્યવહાર પ્રત્યાખ્યાન આરોપિત હૈ. નવરંગભાઈ! જુઓ, નવરંગભાઈને જરી હતું એમ સંયમકા દો પ્રકાર. નિશ્ચય સંયમ ને વ્યવહાર સંયમ. સમજમેં આયા ? આ મોક્ષમાર્ગ પ્રકાશકમાં એ બહુ બોલ છે એવા એક ફેરી ઉતારી લીધા છે. આખુ પાનું છે લ્યો ને!

ઘણાં વર્ષ પહેલા ઓલા નિયમસારમાં પન્નમલ્લધારીએ બધા બોલ લીધા છે. જૈનશાસનના નિશ્ચયના અને વ્યવહારના કેટલા પ્રકાર બધા ઘણાં લઈ લીધા છે ઘણાં વર્ષ પહેલાની વાત છે. એ સંયમ - ઈન્દ્રિયદમનકા વિકલ્પ વો રાગ હૈ, અતીન્દ્રિય આનંદમેં ઘુસકર બાર અવ્રતકા વિકલ્પ ઉઠના નહિ, પાંચ ઈન્દ્રિયકા વિકલ્પ ઉઠના નહિ, મનમેં નહિ છકાયકા હિંસા કરના, અપના સ્વરૂપમેં આનંદકી ધારા ઉઠની વો સમ્યક્પ્રકારે યમ, વો નિશ્ચય સંયમ, ઓર છકાયકી દયાકા વિકલ્પ આદિ ઉઠતે વો વ્યવહાર સંયમ આરોપસે કહનેમેં આયા. એમ આચાર, જ્ઞાનાચાર, દર્શનાચાર, ચારિત્રાચાર, વીર્યાચાર, તપાચાર. સમજમેં આયા ? આ નવરંગભાઈને ઉતારવાનું મન થયું. આ તો ટાંકણે આવ્યું બધું ઘણું આમાં. સમજમેં આયા ? ક્યા ? આચાર. એ જ્ઞાનસ્વરૂપમેં આચાર વર્તન કરના, અંદરમેં વો નિશ્ચય જ્ઞાનાચાર ઓર કાળે વિનયે ભણના એસા વિકલ્પ ઉઠતે હૈ, વો વ્યવહાર જ્ઞાનાચાર. હૈ નહિ ઉસકો કહેના ઉસકા નામ વ્યવહાર. આહાહા! સમજમેં આયા ?

अेम दर्शनायार, सम्यग्दर्शनका निःशंक आदि आठ गुण निर्विकल्प निश्चयमें परिश्रुति होना, वो निश्चय सम्यग्दर्शनका आयार. निःशंक आदि शंका नहि करना आदि व्यवहार, समकितका आठ बोल है व्यवहार, वो व्यवहार आयार समकितका. यथार्थमें अेक ज आयार है. उसकी कथनी दो प्रकारकी चलती है. नवरंगभाई ! आलाहा ! कितना स्पष्ट किया है उसमें धन्नालालज् ! वो व्यवहारका भेद, भेद आते है ने घशां प्रकारसे कोईको. आयार अेम यारित्र आयार पशु यारित्र आयार क्या ? अपना स्वरूपमें लीन होना आनंदकंदमें वो निश्चय यारित्र आयार, और उसमें पंयमहाव्रत आदिका विकल्प उठते है जो पांय समिति, त्रश गुप्ति, तेरह प्रकारका शुभराग, वो व्यवहार आयार है, वो पुण्यबंधका कारण है. भरेभर भोक्षका कारण वो आयार है नहि, निमित्तमें सहयर देभकर उपयारसे कहेनेमें आया है, अेणे आम कहुं छे अेम नहीं.

कुंदकुंदायार्ये कडा के 'व्यवहारो अभूतार्थ' आ जितना बोल कडा वो सब व्यवहार अभूतार्थ है, निश्चय भूतार्थ है. समजमें आया ? के टोडरमले कडा ? नहीं. टोडरमले नहि कडा, सर्वज्ञोअे कडा है. कुंदकुंदायार्ये अगियारमी गाथामें कडा जितना भूतार्थ, यथार्थ, निश्चय अपना निर्विकल्प आदि परिश्रुति यथार्थ, साथमें अभूतार्थ राग है वो वास्तविक समितिनी गुप्तिनी, समजमें आया ? यारित्रआयार, दर्शनआयार पशु निमित्त देभकर सहयरसे आरोप कहेनेमें आया. समजमें आया ? अेम तपायार, तप तो अंदर 'प्रतपन्ति विजयन्ति इति तपः' भगवान आत्माकी शुद्धताका विजय हो, शुद्धताका विजय पताका इरके अंदरमें निर्विकल्पका धाराकी उसका नाम तप सय्या, भीयमें विकल्प आता है मैं उशोदरी करुं, मैं अनशन करुं, मैं आ करुं, मैं आ करुं, मैं आ करुं, करुं अेटले छोडुं आदि विकल्प, उसको व्यवहार तप कहेते है. व्यवहारतप, तप है ही नहीं. अभूतार्थ तप है ने भूतार्थ तप तो अेक ही है. समजमें आया ?

अैसा वीर्यायार, वीर्य.. वीर्य जो अपना पुरुषार्थ वो स्वभाव सन्मुष होकर स्फुरशा हो वो निश्चय वीर्यायार, और भगवानकी आज्ञा व्यवहारसे लक्षमें लेकर वीर्यकी स्फुरशा शुभभावमें हो, अे व्यवहार वीर्यायार. वो सहयर देभकर वीर्यायार कहेनेमें आया. कडो समजमें आया ? ज्ञान, अनुष्ठान अेम सबमें लेना, प्रत्याभ्यान भोक्षनी सीढी. ज्ञान, दर्शन, यारित्र, तप आदि अे मंगलिक, उत्तम, शरश. उसका दो प्रकार समजमें आया ? धर्मयंदज् ! आ धर्मयंद्रकी बात चलती है. धर्मका किरण, शीतल किरण यंद्र है ने शीतलकिरण. कडते है भगवान अेकबार सुन क्या ? मंगल... मंगल ये मंगलकी कथनी

દો પ્રકારકી, મંગલિક એક પ્રકારકા. આમ તો શાસ્ત્રોમ્ બહુત આવે. નામ મંગલિક સ્થાપના મંગલિક, દ્રવ્ય મંગલિક, ક્ષેત્ર મંગલિક, કાળ મંગલિક, ભાવ મંગલિક. ધવલમ્ આતે હૈ. કહેતે હૈ કથની દો પ્રકારકી. મંગલમ્ પુણ્ય-પાપકા નાશ હોકર મમ્ નામ પાપ ગલ નામ ગલના, પાપ શબ્દે પુણ્ય ને પાપ દો હી પાપ, ઉસકા ગલકર આત્માકી ધારા હિમાલય પર્વતમ્સે જૈસે ડુંગરમ્ ઠંડા ઝરણા ઝરતે હૈ, ઐસે ભગવાન હિમાલય ચૈતન્યમૂર્તિ, ઉસમ્ એકાગ્ર હોકર શીતલતા ઝરે, આ ઉસકો મંગલિક મંગલ કહતે હૈ.

અરિહંતા મંગલં, સિદ્ધા મંગલં, સાહુ મંગલં, કેવલિ વો પર તરફકા લક્ષવાળા શુભરાગ વો વ્યવહાર મંગલિક હૈ. પ્રાણભાઈ! એમ શરણ - અરિહંતા શરણં, સિદ્ધા શરણં, વ્યવહારકા વિકલ્પ હૈ. અપના સ્વરૂપકા શરણ નિશ્ચય શરણ હૈ. સમજમ્ આયા? અપના ઉત્તમ પદાર્થ ઉસકા આશ્રય કરકે નિર્વિકાર હોના વો ઉત્તમ હૈ, ઔર બીચમ્ રાગ આતા હૈ ભગવાનકા સ્મરણ આદિ વો વ્યવહાર ઉત્તમ કહેનેમ્ આતા હૈ. સમજમ્ આયા? મંગલિક શરણ તીન હૈ ને? એ આવી ગયું ઉત્તમમાં. કહો, પ્રાયશ્ચિત... પ્રાયશ્ચિતકા દો પ્રકાર. સમજમ્ આયા? વો નિયમસારમ્ આયા થા ને વો નિયમસારમ્ બહુત બોલ લિયા હૈ. બહુત બોલ લિયા હૈ નિયમસાર પર્યાયકા ગ્રંથ હૈ ને! મોક્ષમાર્ગકા ગ્રંથ હૈ ને! વો પર્યાય જિતની નિર્મળ હૈ ને ઉસકા બહુત લિયા હૈ. ઉસકે સાથમ્ વિકલ્પ હૈ ઉસકો વ્યવહાર... ઉસકી મશકરી કર દી હૈ, ટીકાકારે, વ્યવહારકી તો મશકરી ક્રિયા હૈ... ક્રિયા હૈ?

નિશ્ચય વો હી સચ એક બાત હૈ બાદમ્ વિકલ્પ આદિ આતા હૈ ઉપચારસે કહેનેમ્ વ્યવહાર સે (કહેનેમ્ આતા હૈ). મહારાજ ત્યારે ઉપચાર હૈ કે નહીં? કોશ ના પાડે છે ઉપચાર હૈ ને! યથાર્થ નહીં. એટલે યથાર્થ ને ઉપચાર એક હો જાય? ચાવલ ને કોથળા એક હો જાય? બોરી. સમજમ્ આયા? ભાઈ! એમાંય ઘણા કહે માળા દાખલા માણસો બોલે સમજતો ખરો કે બોરી સરખી ન હોય તો ચોખા હાલ્યા જાય, ફલાણું થઈ જાય, ઠીંકણુ થઈ જાય. માળા એવા તર્ક આપે છે ને હેં? કુતર્ક કરે, અરે! સાંભળને એને બોરી ન કહેવાય. બોરી તો જે અખંડ હોય અને ચોખામાં નિમિત્તરૂપે પડે એને બોરી કહેવામાં આવે. ખંડ કરીને ચોખા હાલી નીકળે એને નિમિત્તે ન કહેવાય એને ઉચિત હોય કે અનુચિત હોય. સમજમ્ આયા? દેવીલાલજી! કહો આ બેસતે હૈ કે નહીં? ઘરમ્ બેસતે હૈ કે નહિ બૈરાકો ઈ ખબર નહીં. ઈ જવાબદારી નહીં. (શ્રોતા : દેરી લગેગી) પણ આંહી તો ન્યાયસે બાત તો ચલતી હૈ. વો તો આઠ વર્ષકી બાળક હોય તો સમજે કે આ બાત ઐસે ચલતી હૈ. નિશ્ચય સ્વઆશ્રય નિર્મળાનંદ પર્યાય હોના યે સત્ય હૈ ઔર ઉસકી સાથમ્ રાગકી મંદતા ચલે ઉસકો વ્યવહારકા

ઉપચાર કરકે કહા, એ માર્ગ બાર્ગ હૈ નહીં. કેમ વાડીભાઈ ! બરાબર હશે આ બધું ? આહાહા ! ક્યા કહા ?

(શ્રોતા : ...) હા...હા...! એ પ્રાયશ્ચિતના દો પ્રકાર. પ્રાય - જ્ઞાન ઉસમેં એકાકાર હોકર વિકારકી ઉત્પત્તિ ન હો ઉસકા નામ નિશ્ચય પ્રાયશ્ચિત. વિકલ્પ ઉઠા ભગવાન મેરે પાપ લગા ઐસા લેના વિકલ્પ વો વિકલ્પકો વ્યવહાર પ્રાયશ્ચિત કહેતે હૈ. કથન દો પ્રકારકા વસ્તુ એક પ્રકારકી. સમજમેં આયા ? એમ આલોચના - આલોચનાકા પ્રકાર દો સ્વરૂપમેં સ્થિર હોકર આલોચના કરના વો નિશ્ચય વિકલ્પસે આલોચન કરના અરે ! મેરે ઐસા પાપ લગા થા ઐસા લગા થા વો વિકલ્પ વ્યવહાર. સમજમેં આયા ? સમિતિ ને, શીલ ને, સંયમ ને બધુ લેવું. શીલ નિશ્ચય ને વ્યવહાર, એમ ક્ષમાના નિશ્ચયને વ્યવહાર. તદ્દન ક્રોધ રહિત અપની શાંતિકી ક્ષમા અંદર પ્રગટ કરના આ દસ પ્રકારકા હૈ ને ! દસ પ્રકાર શું કહેવાય તમારે પર્વ દસલક્ષણી પર્વ. ઉસમેં ઉત્તમ ક્ષમા હૈ વો અભ્યંતરમેં વિકલ્પ રહિતકી ક્ષમા વો ઉત્તમક્ષમા કહેતે હૈ એ નિશ્ચય ક્ષમા, અને પરકા અપરાધ વો માફ કરના વિકલ્પસે વો વ્યવહાર ક્ષમાકા આરોપ ઉસમેં આતા હૈ. સમજમેં આયા ?

એમ બધું છે. લ્યો, ઘણાં નામ આપ્યા છે એમાં. અરે ! સમાધિ... સમાધિકા કથન દો પ્રકારકા. પ્રાણભાઈ ! સમાધિ એક પ્રકારકી 'ચિત્ત સમાધિ હુએ દસ બોલે' અંતરમેં શાંતિ, સમાધાન, રાગ વિના અનાકુળતાકી સમાધિ વો નિશ્ચય સમાધિ. વિકલ્પ ઉઠે યમ નિયમ આદિકા વિકલ્પ આતે હૈ, શાસ્ત્રમેંભી આતા હૈ ઐસા વો વિકલ્પ ઉઠતે હૈ રાગ, વ્યવહાર સમાધિ કહેનેમેં આતી હૈ, યથાર્થમેં હૈ નહીં. એમ નિયમ એમ બધુ લઈ લેવું લ્યોને ! સમજાય છે ? નિશ્ચય ને વ્યવહાર લ્યો. સેવાને બહુ ઘણી ભાષા નાંખી. (શ્રોતા : મોક્ષ પણ દો પ્રકારકા) હેં ? મોક્ષકા ય દો પ્રકાર. એક ભાવ મોક્ષમાર્ગ, ભાવમોક્ષ ને દ્રવ્ય મોક્ષ. પરમાણુકા છૂટના દ્રવ્યમોક્ષ, પૂરણતાકી પ્રાપ્તિ વો ભાવ મોક્ષ. સમજમેં આયા ? ઠીક લ્યો, યહાં આયા દેખો. "જાતેં નિશ્ચય વ્યવહારકા...." આ બોલ કહાને સબ. સર્વત્ર... "સર્વત્ર ઐસા હી લક્ષણ હૈ...." ચારે અનુયોગમેં કથન ચલા હો, વો સચ્ચા નિશ્ચય સ્વદ્રવ્ય આશ્રય કથન ચલા હો, વો નિશ્ચય, અને પરનિમિત્ત કે પરદ્રવ્ય રાગસે આશ્રય રાગસે કથન ચલા હો, વો વ્યવહાર, ઉપચાર, વો તો ભાન નહિ અને અમારે નિશ્ચય વ્યવહાર દો હી કા હમ સેવન કરતે હૈ.

વળી કેટલાક એમ કહે કે સોનગઢમાં એકલું નિશ્ચય છે. અમારે નિશ્ચય ને વ્યવહાર દો હૈ. અરે ભગવાન ! તેરી બાત કંઈ ! કોઈ ઐસા કહેતે હૈ ન્યાં તો એકલા નિશ્ચય...

નિશ્ચય... નિશ્ચય આપણે નિશ્ચય ભી કરના ને વ્યવહાર ભી કરના. અરે! કરનામાં એકેય તેરા સચ્ચા નહીં સાંભળને! કર્તા બુદ્ધિએ મેં કરું રાગકા વો તો મિથ્યાદષ્ટિ હૈ. ત્યાં નિશ્ચય કેસા ને વ્યવહાર કેસા? સમજમેં આયા? હમારે વ્યવહાર કરના હૈ... કરના હૈ... કરના હૈ... વ્યવહાર એટલે રાગ મેરે કર્તવ્ય હૈ ને રાગ મેરે કરના અને રાગ મેં ક્રિયા, મિથ્યાદષ્ટિ હૈ. વ્યવહાર અને નિશ્ચય હૈ કહાં તેરી પાસ? સમજમેં આયા? પણ અપના સ્વરૂપકી અંતર અનુભવ હોકર પ્રતીત થઈ વો રમણતા અંશે હુઈ વો સાથમેં વિકલ્પ જો રાગ, વ્યવહારસે અનુકૂળ દેખકર, અનુકૂળ તો નહિ, હૈ તો પ્રતિકૂળ. પણ વ્યવહાર એટલે કુદેવ, કુગુરુ, કુશાસ્ત્રકી જે શ્રદ્ધા થી વો છૂટ ગઈ. અવ્રતકા પરિણામ છૂટ ગયા. ઉસકા જ્ઞાન ન રહા. એસા નિમિત્ત શાસ્ત્રકા જ્ઞાન, પંચમહાવ્રતકા પરિણામ, નવતત્ત્વકી, ભગવાને કહેલા નવતત્ત્વો ઉસકી ભેદવાળી શ્રદ્ધાકા વિકલ્પ, સહચર દેખકર નિશ્ચય સમ્યગ્દર્શન કે સાથમેં વ્યવહાર કહનેમેં આતા હૈ. સમજમેં આયા?

વો મોક્ષમાર્ગ (પ્રકાશક) ભાઈ કેવા એ ટોડરમલ ને? હા ટોડરમલ રહસ્યમય ચિટ્ટીમેં નહીં? કે વ્યવહાર સમકિત કે સાથ નિશ્ચય સમકિત ગમનરૂપ પરિણમનરૂપ સદા હોતા હૈ. એસા લિયા હૈ રહસ્યપૂર્ણ ચિટ્ટી! હૈ ને ઉસમેં. હા, પણ આ પણ હિંદી એને એ બરાબર. હિંદી તો ત્યાં વાંચન માટે રખા હૈ અમારે તો આંહી ગુજરાતી ફાવતી હૈ. સમજમેં આયા? રહસ્યપૂર્ણ ચિટ્ટીમાં છે ને? એ ત્રણસો છેતાલીસ ના એ તો સમકિત... છેતાલીસ નહીં. ટોડરમલજી ચિટ્ટી તેતાલીસ? તેતાલીસ હા... હા... સ્વપરના એ નહિ...નિશ્ચય એ નહિ. એ આમ છે, આ બાજુ છે, આ બાજુ છે, આ બાજુ છે. ત્રણસો પચાસ “પરંતુ એટલુ જાણવું કે સમકિતીને....” વચમાં પેરેગ્રાફ “સમ્યક્ત્વીને વ્યવહાર સમકિતમાં નિશ્ચય સમકિત ગર્ભિત હૈ....” વો શ્લોકાર્થ હૈ ઉસમેં આખિરકી લીટી. “ઈતના જાનના કે સમ્યક્ત્વીકો વ્યવહાર સમકિતમાં નિશ્ચય સમકિત ગર્ભિત છે. નિરંતર ગમનરૂપ હૈ....” છે ને! ક્યા કહતે હૈ આ વ્યવહાર સમકિતકા વિકલ્પ તબ ઉસકો કહનેમેં આતા હૈ કે સાથમેં નિશ્ચય સમકિત પરિણમન અને ગમનરૂપ હો તો. એકીલા વ્યવહારકો વ્યવહાર કહનેમેં આતા નહિ. એકલા સમજમેં આયા?

આમાં ઘણું લખ્યું છે. ક્યા ક્રિયા(કહા)? “વો નિશ્ચય અને વ્યવહારકા સર્વત્ર એસા હી લક્ષણ....” લક્ષણ વો લક્ષણાભાસ નિકલકર વો લક્ષણ ઉસકા હૈ. દૂસરાકા લક્ષણ હૈ નહીં. દૂસરામેં અતિવ્યાપ્તિ, અવ્યાપ્તિ અને અસંભવ દોષ લગે વો લક્ષણ હૈ હી નહીં. નિશ્ચય વ્યવહારકા લક્ષણ. સમજમેં આયા? જહાં જહાં, સ્વદ્રવ્ય આશ્રય પરિણતિ

વિકાર રહિત, વો સચ્ચા મોક્ષમાર્ગ, સચ્ચા સમતા, સચ્ચા દર્શન વિગેરે. સાથમેં વિકલ્પ ઉઠતે હૈ, નિમિત્તકા વો વ્યવહાર પ્રતિકૂળ નહીં. ક્યા પ્રતિકૂળ નહીં? કુદેવ, કુગુરુ, કુશાસ્ત્ર વો અપેક્ષાસે. એ અપેક્ષાએ વ્યવહારે અનુકૂળ કહેકર નિમિત્ત કહા. નિશ્ચયમેં તો સ્વભાવકી અપેક્ષાસે તો પ્રતિકૂળ હી હૈ. સમજમેં આયા? તો કહતે હૈ કે દરેક આત્માકા જિતના પ્રકાર નિશ્ચય વ્યવહારકા ચલા ઉસમેં વો લક્ષણ લગા દેના, આ લક્ષણ લગા દેના. આઘાપીછા તમારા કલ્પનાસે લક્ષણ કરના નહીં. કહો સમજમેં આયા? “સાચા નિરૂપણ સો નિશ્ચય....” લ્યો એ સત્યકા કથન ચલે શાસ્ત્ર ચાર અનુયોગમેં દ્રવ્યાનુયોગ, ચરણાનુયોગ, કથાનુયોગ, કરણાનુયોગ સમજમેં આયા? સચ્ચા કથન ચલે જૈસા હૈ વૈસા ઉસકા નામ નિશ્ચય. અને “ઉપચાર નિરૂપણ સો વ્યવહાર....” પણ ઉપચાર જો કથન ચલે, આરોપિત કથન ચલે, નિમિત્તકા સહચર દેખકર ચલે, વો સબ વ્યવહાર હૈ.

“તાતૈં નિરૂપણ અપેક્ષા દોય પ્રકાર મોક્ષમાર્ગ જાનના....” લ્યો એ કથનની અપેક્ષાએ આ નિરૂપણ એટલે કથનને? તમે પહેલા નિરૂપણ, નિરૂપણ બહુ બોલતા એટલે કીધું. આપણા પંડિત નિરૂપણ બોલે, આપણે નિરૂપણ કરવું આમાં નિરૂપણ ભાષા છે ને? પહેલા એમ કહેતા તમે શરૂઆતમાં નિરૂપણની અપેક્ષાએ બે પ્રકારે મેં કીધું પણ આમાં નિરૂપણ હવે બીજી ભાષા તો કરો એમ મનમાં થાય હોં. કથનની અપેક્ષાસે બે પ્રકાર. સમજમેં આયા? નિરૂપણ અપેક્ષાએ દો પ્રકાર મોક્ષમાર્ગ જાનના. કથનની પદ્ધતિમેં દો પ્રકારકી કથન પ્રણાલિકા ચલી ચલતી હૈ. “એક નિશ્ચય મોક્ષમાર્ગ હૈ અને એક વ્યવહાર મોક્ષમાર્ગ હૈ. એસે દો હી મોક્ષમાર્ગ માનના મિથ્યા હૈ....” દેખો “એસે....” સબમેં બાત લિયાને આપણે. “એમાં દોયકો માનના વો મિથ્યા હૈ - યથાર્થ એક હૈ....” આહાહા!

વીતરાગપણા બતાના હૈ કે શાસ્ત્રકો ક્યા બતાના હૈ? તો જિસમેં જિતના પ્રકાર અભી કહા ઉસમેં વીતરાગતા વો સત્ય હૈ. ઉસમેં રાગ આદિ આતા હૈ વો ઉસકી વિપરીત બાત હૈ. વો મોક્ષમાર્ગ હૈ હી નહીં. સમજમેં આયા? એક નિશ્ચય મોક્ષમાર્ગ અને એક વ્યવહાર મોક્ષમાર્ગ એમ બે થયા. એક એક કર્યું ને પાછું આમ. એક નિશ્ચય મોક્ષમાર્ગ એક વ્યવહાર માર્ગ એમ એક એક કરીને બે એકડે? બે એકડે બે. (શ્રોતા : એક ને એક બે) એક ને એક બે થયા કે નહીં? કહે “એસા નાહીં....” એમ કહેતે હૈ દેખો. એક નિશ્ચય મોક્ષમાર્ગ હૈ અને એક વ્યવહાર મોક્ષમાર્ગ હૈ આ એક નિશ્ચયમોક્ષમાર્ગ, આ એક વ્યવહાર મોક્ષમાર્ગ એસા નહીં. મોક્ષમાર્ગ તો એક હી હૈ. દૂસરા મોક્ષમાર્ગકા તો આરોપસે કથન ઉપચારસે કરનેમેં આયા હૈ. અચ્છા. સમજમેં આયા? એસે દોય મોક્ષમાર્ગ માનના મિથ્યાદૃષ્ટિ



है. शेठी! और निश्चय व्यवहार दोगुणिको उपादेय माने है सो भी लज्ज है. बे मार्ग मानना ओ मिथ्यात्व है अने दोगुणिको आदरणीय मानना भी मिथ्यादृष्टि है. समजमें आया ?

त्यो, जबर नहि, माथे बेसे अने कहे जय मडाराज, जय नारायण. समजमें आया ? दुर्गादासज्ज ! जबर नहि ने माथे कहे जय नारायण मडाराज. हमारे शेठी भी जैसे करते थे हों जबर नहि तो क्या करे ? वो तो बडा जानदान है. बडा पुण्य पण नहीं ? जबर विना क्या करे जयपुरमें रहे तो भी ? क्या किया(कहा) ? ओय दोगुणी मोक्षमार्ग मानना भी मिथ्यादृष्टि है. मिथ्याका अर्थ मिथ्यादृष्टि नहि होता है ? मिथ्या ओटले असत्य, असत्य ओटले मिथ्यात्वभाव अने “निश्चय व्यवहार दोगुणिको उपादेय....” देणो निश्चयभी आदरणीय है ने व्यवहार भी आदरणीय है “सो भी लज्ज मिथ्यात्व है....” समजमें आया ? आ अधिकार लैया हमारे डोलीयंदज्ज और हेमराजज्ज ओ माग्या था. बहु जरूरी थे. आ उसके कारण यहां क्लासको भी बराबर सुननेमें आवे. समजमें आया ? कहेते है के “निश्चय व्यवहार दोगुणिकुं उपादेय माने....” लैया ! व्यवहार भी आदरणीय है. निश्चय भी आदरणीय है, आ व्यवहारसे व्यवहार आदरणीय है, ओम कलनेमें आया. जरेजर आदरणीय नहि है, जानने लायक है. व्यवहार जानने लायक है ने निश्चय आदरने लायक है कारणके दोगुण नय विरोध है. त्तारे गडबड त्तार्ध धन्नालालज्ज !

(श्रोता : ...) लोको... ठीक नांभ्युं ओणे. बीज्ज त्ताराओ कहीओ तो व्यवहार लौकिक मार्ग है वो द्रव्यसंग्रहमें आया है नहि शुं कीधु त्त्यां ? लोकोक्ति द्रव्यसंग्रहमें आया है लोकोक्ति उसका नाम व्यवहार. परमार्थ लोकोत्तर, लोकोक्ति व्यवहार, है जरा. है उसकी त्तूमिका योग्य पण आदरणीय नहीं, मोक्षमार्ग नहीं, वो व्यवहार जितना कहा समितिने बधा वो संवर नहि, वो गुप्ति नहि, निर्जरा नहि, आ बंधकी पर्याय को उपचारसे मोक्षमार्ग, समता, सामायिक, पडिक्कमण्णा आदि कहेना पण वो निश्चय हो तो. उसको (श्रोता : ...) व्यवहार आदरणीयका अर्थ क्या ? अर्थ क्या ? के है अशुभ टणकर ओसा टणकर भी कथनकी पद्धति ओसी है क्या करे ? टाणे क्या ? वो तो वो समयमें जैसे होता है. पण वो तीव्र न हुआ तो वो अपेक्षासे उपादेय जाननेलायक उपादेय है. जानने माटे उपादेय है आदरने माटे है नहीं. समजमें आया ? शुं कहे छे ? “सो निश्चय व्यवहारका स्वरूप तो परस्पर विरुद्ध लिये है....” निश्चय व्यवहार से विरुद्ध, व्यवहार निश्चयसे विरुद्ध तो दोगुण भी कैसे यले अने दोगुण उपादेय भी कैसे यले उसकी व्याख्या विशेष करेंगे.